Lec

Economic & Resource Geography

BA part - II paper - IV

कृषि को प्रभावित करने वाले कारक

सामाजिक घटक (Social factors)

इसके अंतर्गत मानव का भोजन अभिरुचि आदि घटक सम्मिलित किये जाते है। सामाजिक घटक के कुछ अन्य कारक भी सम्मिलित रहते है। ये निम्नलिखित है। -

(I) मानव भोजन मे रुचि (Taste for food)

II अन्य कारक

(a) स्थायी जीवन

(b) अनुकूल जलवायु

(c) बीजों की उन्नत नस्लें

(I) मानव भोजन की रुचि (Taste for food)

विभिन्न देशों और जलवायु प्रदेशों मे मनुष्य की भोजन, रुचि भिन्न-भिन्न पायी जाती है। मानसूनी देशों मे चावल और मछली तथा दालें, शीतोष्ण प्रदेशों में दूध, मक्खन, रोटी फल तरकारियाँ मांस और शराब आदि अधिक प्रयोग मे ली जाती है। फलतः यहाँ इन्हीं वस्तुओं का अधिक उत्पादन किया जाता है।

चीन में तो चावल भोजन का मुख्य अंग है, जबकि भारत मे दक्षिण के पठार के निवासियों का मुख्य खाद्यान्न ज्वार - बाजरा एवम् सोरघम है और उत्तरी भारत मे गेहूँ का प्रयोग अधिक किया जाता है।

फ्रांसीसी कृषक जहां भी भूमि उपलब्ध हो जाती है वहाँ अन्य अनाजों की अपेक्षा गेहूँ ही बोना अधिक पसंद करते हैं।

भूमध्यसागरीय प्रदेशों में अंगूरों की अधिकता के कारण ही शराब पीने का प्रचलन अधिक हुआ है।

चीन तथा तिब्बत मे बौद्ध धर्मावलम्बियों द्वारा मांस खाना वर्जित है।

अतः वहाँ मछलियाँ अधिक खायी जाती हैं।

(II) अन्य कारण

आधुनिक कृषि को व्यापारिक चक्रो तथा युद्धो आदि का उतना ही भय रहता है जितना कि प्राचीन कृषि को जमींदारो ओलो बाढ़ो तथा अकालो का भय रहता था। भारतीय कृषक आज भी मानसूनो की अनिश्चितता से भयभीत रहता है और उसी के कारण वह आज तक भाग्यवादी बना हुआ है। वह अपनी फसल को मानसून का जुआ मानता है।

पौधो का उत्पादन मानव की वृद्धि का परिचायक है। कृषि द्वारा न केवल उसके भोजन की प्राप्ति निश्चित हो जाती है वरन् वह उसके द्वारा एक सीमित क्षेत्र से अधिक भोजन की प्राप्ति भी कर सकता है।

पौधो या फसलों के उत्पादन के लिए

अनेक तथ्यों की आवश्यकता पड़ती है।

(अ) स्थायी जीवन → फसलों को पैदा करने के लिए मानव को एक स्थान पर टिककर निवास करना पड़ता है। स्थायी जीवन में ही कृषि कार्य सम्भव है क्योंकि बीज डालने से लेकर पौधे के बढ़ने और फसल पकने तक उसकी निरंतर देखभाल करना आवश्यक होता है। घुमक्कड़ लकड़हारे शिकारी या मछुए इस कार्य में पूरा योगदान नहीं दे सकते हैं।

(b) अनुकूल जलवायु → फसलों के उत्पादन के लिए अनुकूल जलवायु दूसरा आवश्यक तथ्य है। जिससे न केवल बीज वरन् कलमें लगाने की भी सुविधा होती है।

(c) बीजों की उन्नत नस्लें → अधिकांश पौधे जंगली पौधों का ही रूप होते हैं। विशेष चयन और वैज्ञानिक क्रियाओं से ही फसलों की नस्लें सुधारी जाती हैं और बीजों की उन्नत नस्लें कृषि के लिए अधिक लाभकारी होती हैं।